
जादूबंगाला

वेणीमाधवकी अपूर्व लहरी

अर्थात्

जादूबंगाला

पं० वेणीमाधव द्वारा संगृहीत

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

संस्करण : दिसंबर २०११, संवत् २०६८

मूल्य १० रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,

मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

सावधान.

खेल करनेवालोंको चाहिये कि, प्रथम खेल अच्छी तरह जाँचकर छिपे छिपे करे. जब अच्छी तरह उतर जाय तब मनुष्योंके सन्मुख करे जिससे लज्जित होना या कोई और बाधा न पड़े.

संग्रहकर्त्ता.

श्रीः ।

वेणीमाधवकी अपूर्व लहरी
अर्थात्
जादूबंगाला ।

१ अण्डा उड़े.

दोहा—अंडेमें जो छेद कर, भरे ओस तिहि माहिं।
छिद्र मोमसे बंदकर, तो अंडा उडि जाहिं॥

२ पानीका दीपक जले.

चौपाई—श्वेत मोम अरु गंधक पीरो । दोउ मँगाय करै तदबीरो ॥ मोम गर्म करि गंधक डाले । तिसमें बाती वस्त्र डुबाले ॥ दीपक जल भरि बाती बारे । देख तमासो भूलें सारे ॥

३ दुग्ध जमै.

दोहा—तालमखाना पीसके, दूधमाहिं मिलवाय ।
जामन बिन जम जायगो,जब चाहे करवाय ॥

४ कपड़ेकी ओटमें निशाना लगे.

बन्दूकमें गोलीके स्थानमें पारा भरो और बंदूकके आगे कपड़ा तानो और निशाना लगाकर जिस जानवरको मारो वह मर जायगा, परंतु कपड़ेपर दाग न आवेगा.

५ बुझा दीपक जले.

गंधक, कपूर और हरतालको समभाग लेकर अत्यंत महीन पीसो, पीसकर रख छोड़ो जब दीपक बुझ जाय तब इसी बुकनीमेंसे थोड़ीसी लेकर डराय दो परंतु दीपकका फूल न बूझनेपावे उसीपर डराना, दिया जल उठेगा.

६ सीसा चबाना.

जलती हुई अग्निमें सीसा डाल दो जब खूब लाल हो जाय तब अदरखके रसमें बुझालो तो सीसा ऐसा नर्म हो जायगा कि उसे दांतोंसे

चबाय जावो परंतु मुँहमें नहीं लगेगा. देखनेहारे आश्चर्य मानेंगे.

७ अंडा कूदे फांदे.

लोग देखकर कहेंगे कि हा ! हा ! ! वाहवा!!! एक मुर्गेका अंडा लेकर उसमें महीन छिद्र करके भीतरका सब आलमगंज निकाल डालो और तीन मासे पारा उसके भीतर भरो और छेद मोमसे या आटेसे भर दो फिर खूब गर्म बालूपर अंडेको रख दो गर्मी पाकर अंडा उछलेगा और आश्चर्य ज्ञात होगा.

८ पतंगे न आवें.

पियाजको काटकर एक टुकड़ा दीपकमें रखनेसे पतंगे नहीं आते हैं.

९ बतासा न फूटे.

साबुत बतासेको तेलमें डुबोकर पानीमें डाल दो तो बहुत देरतक बना रहेगा.

१० अक्षर उडे.

नौसादर,संखिया और सुहागेको महीन पीस-कर हाथके लिखे अक्षरोंपर मले और धूपमें राखे तो सब अक्षर उडकर कोरा कागज रह जायगा-

११ वस्त्र न जले.

मारकीन (ननगिलाट) कपडेका एक टुकडा घीग्वार (घीकुआर कुआरी) के रसमें भिजाओ फिर छाँहमें सुखा लो ऐसेही सात बेर भिजाओ और सुखाओ परंतु सातों बार छाँहमें सुखाओ. फिर चाहे उसपर लकडी बिछाकर अग्नि जलाओ होम करो फिर वैसाही कपडा निकालो कभी न जलेगा.

१२ चलनीमें पानी.

चलनीको तीन वार घीकुवारके रसमें तर करो और तीनों बार छाँहमें सुखाओ फिर उसमें पानी भरो तो पानी नीचे नहीं गिरेगा.

१३ मुखमें अग्नि.

नौसादर और अकरकरहा मुँहमें खूब चबाकर थूक दो फिर आग मुँहमें रक्खो तो मुँह नहीं जलेगा, परन्तु आग कपासकी होनी चाहिये नहीं तो मुँह जल जायगा.

१४ पत्थरपै अक्षर.

मोमको मीठे तेलमें पकाओ फिर उससे पत्थरपर चाहे फूल बनाओ या नाम लिखो तीन दिनतक रहने दो तत्पश्चात् रसके सिरकेसे धो डालो फिर लिखा हुआ नहीं मिटेगा.

१५ बिना आँच खीलें.

जुआर (जुंडी) को तीन रात दिन पानीमें फुला रक्खो, फिर एक रात दिन आकके दूधमें तर रक्खो फिर एक रात दिन थूहरके दूधमें तर रखके छांहमें सुखा लो. खेल दिखानेके समय २०।२१

दाने लेकर मुट्ठीमें दृढ बन्द करो थोड़ी देरमें खीले (भूजा) हो जावेंगी.

१६ शस्त्रपे नाम.

नौसादर नीला थोथा दो दो मासे लेकर कागजी नींबूके रसमें घिसो फिर मोमको औटाके किसी शस्त्रपे लिखो ऊपरसे वह घिसी हुई चीजें मोमके लिखेपर लगावो और थोड़ी देर धूप दिखादो फिर धो डालो लिखाहुआ उभर आवेगा और पायदार रहेगा.

१७ बीछी पकड़ना,

चिरचिरेके पेड़की जड़को हाथमें रखकर जीती बीछी पकड़ लो जहर नहीं चढ़ेगा

१८ पवनमें दीपक.

कसौटीका पत्थर अत्यंतमहीन पीसके दियाकी बातीपर डालदो चाहे कितनी पवन (हवा) चले परंतु दीपकनहींबुझेगा किंतु सरसोंकातेलजलाना,

१९ हस्तमें अग्नि.

पुराने मेंढककी चर्बी हाथमें मलकर अग्नि उठा लो हाथ नहीं जलेगा।

२० सीसाका रस उड़े.

पीली कौड़ीको जलाकर भस्म करो और नींबूका अर्क सीसेमें भरो फिर भस्म भी उसमें थोड़ीसी डाल दो और उसे (सीसेको) बंद करो बंद करे भी रहो तो रस उड़ जायगा.

२१ काग पकड़नेकी विधि.

कायफल घिसके उसके अर्कमें गेहूँ भिगो दो और सुखालो यदि वही दाने कौएको खिलायदो तो बुद्धि भ्रमित हो जायगी और वह गिरपड़ेगा चाहे उसे पकड़ लो. फिर गर्मपानीका छींटा लगानेसे पहिली दशामें आजायगा.

२२ मसी बिन रंगबिरंगकी लिपि.

१ पियाजका रस निकालकर उसको श्वेत कागजपर लिखो और छायामें सुखालो तो कोरा कागज ज्ञात होगा जब अग्नि दिखाओगे तब पीले अक्षर उघड़ आवेंगे.

२ दूधसे लिखकर सुखा लो तो पानीमें डालनेसे नीले रंगके अक्षर दिखाई पड़ेंगे.

३ गाजरके रससे लिखकर सुखा लो आग दिखानेसे पीले अक्षर देख पड़ेंगे.

४ नौसादर नींबू या पियाज वा लहसनके रससे श्वेत कागजपर लिखकर सुखा लो आंच दिखानेसे लाल रंगके अक्षर देख पड़ेंगे

५ गायके दूधमें थोड़ा नौसादर मिलाकर श्वेत कागजपर लिखकर सुखालो और आंच दिखाओ तो हरे रंगके अक्षर प्रगट होवेंगे.

६ नींबूके रससे श्वेत कागजपर लिखाकर सुखानेसे कुछ ज्ञात न होगा, परन्तु अग्नि दिखानेसे वसंतीरंगके अक्षर प्रगट होंगे.

२३ सर्पके ऊपर.

यदि किसीको काले सर्पने डसा हो तो शीघ्रही थोडा नीलाथोथा महीन पीसकर उसकी नाकमें पोंगीसे फूँक दो तो आराम हो जायगा, परन्तु साँपका काटा हुआ आध घंटेसे अधिक न हो.

२४ बिना खूटीकी खडाऊं.

श्वेत गुंजाको महीन पीसकर खडाऊँकी खूँटी उखाडकर खडाऊँपर लेपकरो और छाँहमें सुखाकर पैर धोकर उसी खडाऊँपर रखो और टहलो फिरो खडाऊँ पांवसे अलग न होंगी.

२५ पानीमें सूखी बालू.

अच्छी बालू तीन पाव लेकर एक छटांक

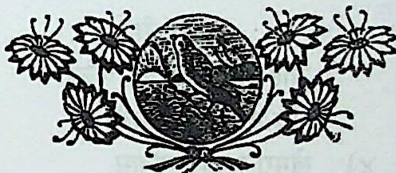
मोम गलाकर बालूमें डालो और अच्छी तरह बालूमें मल दो जिसमें जान न पडे. फिर बरतनमें रखछोडो जब किसीको दिखाना हो तो एक चौडे मुँहका बरतन ले उसमें पानी भरदो (यहां थोडी चालाकी चाहिये)बालू मुट्ठीमें भर मुट्ठीको उक्त पानीके भीतर ले जाकर चुपचाप बालूको रख दो कि बालूकी पिंडी न फूटने पावे,ऊपरसे पानीको गँदला कर दो जिसमें लोगोंको ज्ञातहो कि,बालू पानीमें मिल गई.फिर हाथको निकालकर सबको दिखा दो फिर पानीमें हाथ डाल धीरेसे उसी बालूकी पिंडीको उठाकर बाहर ला सबके सामने मुट्ठीके एक कोनेसे वालू झरझरादो.

२६ नींबूसें लोहू.

ओढउलके फूल लेकर छूरीमें अच्छी तरह सर्वत्र लगादो फिर सुखाकर कई बेर लगाओ और

सुखाओ छुरीमें कुछ न ज्ञात होगा एक नींबू छील कर पेट के ओरसे उक्त छूरीसे काटो जितना रस छूरीमें लगेगा सब लाल हो जायगा ।

इति श्रीकान्यकुब्जभूषण श्रीपंडितदेवदत्तत्रिपाठीजू तस्यात्मजवेणीमाधवत्रिपाठीविरचितवेणीमाधवकी अपूर्व लहरी अर्थात् जादूबंगाला समाप्त ।



पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग
खेतवाडी, मुंबई ४००००४

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११०१३

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि.ठाणे- महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक - वाराणसी (उ. प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

